P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-1* September- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आतंकवाद का मानव समाज पर प्रभाव

सरोज हारित
सह आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय लोहिया महाविद्यालय,
चूरू, राजस्थान, भारत

सारांश

आतंकवाद आज विश्व समाज में तेजी से फैल रहा है। तेजी से मानव समाज में पहुंच रहा और अपना प्रभाव दिखा रहा है। यह मानव समाज, सभ्यता, संस्कृति एवं अस्तित्व के लिए एक घोषित खतरा है। आतंकवाद को साधारण हिंसा मानना भूल है। हमें आतंकी हिंसा के वास्तविक स्वरूप को ठीक से समझना होगा, क्योंकि आतंकी हिंसा मानवीय गिरावट का निम्नतम बिन्दु है। यह चरम आत्महीनता तथा पेशाचिकता की स्थिति है, आतंकवाद की मात्र निन्दा और भर्त्सना वस्तुतः एक सरलीकृत प्रतिक्रिया ही होगी। उसकी निन्दा, उसकी क्रूरता व अमानवीयता के लिए की जाती हैं। मानव के क्रूर हो जाने के पीछे जो जटिल मानोवृति काम कर रही हैं उसे समझना आवश्यक है। इस प्रकार की मनोवृति मनुष्य के मन में तमाम रूग्णताओं के साथ ही पृथकता के भाव को भी जन्म देती हैं।

आतंकवाद का जो स्वरूप वर्तमान में हमारे सामने है उसे रोकने के लिए हमें अथक प्रयास करने होंगे, जिससे विश्व समाज पर मडरा रहे संभावित विनाश के खतरे को हम दूर कर सकते हैं। आतंकवाद आज विश्व समाज में अपने पांव इतनी मजबूती से जमा चुका हैं कि इसको आसानी से या केवल वैचारिक प्रयासों से रोका नहीं जा सकता। हमें इन कारणों का पता लगाना होगा जो कि एक सभ्य समाज में आतंकवाद को जन्म दे रहे है। इनक कारणों का पता लगाकर हम उनमें व्याप्त दोषों को दूर करें तो निश्चित तौर से विश्व समाज से हम आतंकवाद को मिटाने में कामयाब हो सकते है।

मुख्य शब्द : आतंकवाद, कट्टरपंथ, वैमनस्य, सामाजिक संरचना, हिंसा, मानवाधिकार, पर्यावरण।

प्रस्तावना

सभ्य मानव समाज में सदैव शान्ति, सहायोग, समन्वय, विकास आदि की आवश्यकता रही है तथा मानव के सर्वांगीण विकास के लिए इन सभी बातों का होना आवश्यक है। लेकिन समय के साथ इनको प्रभावित करने वाले अनेक कारक चुनौती बनते रहे है। ऐसी ही एक चुनौती है आतंकवाद। आज आतंकवाद की समस्या सम्पूर्ण विश्व के सामने गम्भीर है जिससे संसार का कोई भी राष्ट्र एवं समाज अछूता नहीं है।

आतंकवाद क्या है ? इस बारे में विभिन्न विद्वानों के अलग–अलग मत है लेकिन इनमें कुछ ऐसे सामान्य मत जरूर हैं जो प्रायः सभी की परिभाषाओं में मिल जाते है।

किसी व्यक्ति, स्थान, समूह या देश–विदेश के लिए जो आतंकवादी या अलगाववादी, हिंसक या देशद्रोही है। दूसरे व्यक्तियों, समूह या देश के लिए देशभक्त या स्वतंत्रता सेनानी की श्रेणी में आ सकता है। जो आतंकवादी किसी विशेष दृष्टिकोण वाले समूह में घृणा का पात्र होता है या कानून का गुनहगार होता है, वही दूसरों के लिये देशभक्त का दर्जा रखता है तथा मरने पर अपना नाम शहीदों की सूची में दर्ज कराता है। यह विरोधाभास ही आतंकवाद को एक स्पष्ट परिभाषा के दायरे में लाने से हमें रोकता है।

प्रारम्भ में आतंकवाद को एक सामान्य हिंसा माना गया लेकिन बाद में कुछ हटकर रूस के मिखाइल राबुनिन, रसगे नेकामेव, निकोलाई मोरोजो, जी टार्नोखी जैसी लेखकों ने इसे परिभाषित किया और राजनैतिक उद्देश्यों को हासिल करने के लिए की जाने वाली कार्यवाही बताया। सेन्टा मोनिका रिसर्च

इंस्टीट्यूट के एम.लेनकिन, एबरडीन के इंटरनेशनल रिलेशन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पाल विलकिंस और प्रोफेसर जेफरी रूबिन हेमिल्टन, वाल्टर आदि ने इसे अपनी तरह से परिभाषित कर आतंकवाद को एक नए क्षेत्रों से जोड़कर इसकी व्यापक परिभाषाएं दी।

आतंकवाद को विभिन्न शैलियों में परिभाषित किया गया है और इसके बारे में काफी मतभेद है। विकसित देश जहां इसे रूग्ण या बीमार मानसिकता के रूप में परिभाषित करते हैं और अतर्कसंगत आचरण बताते हैं वहीं कुछ विकासशील देश इसे क्रान्ति और इसके आचरण करने वाले को क्रान्तिकारी की श्रेणी में ला खड़ा करते है।

शाब्दिक रूप से 'टैरर (आतंक)' शब्द लैटिन भाषा से आया है और रोमन समूह की भाषाओं में जड़ जमाने के बाद यह शब्द यूरोप की अन्य भाषाओं में भी प्रचलित हो गया। इस शब्द से उत्पन्न टैररिज्म (आतंकवाद) और एक्ट ऑफ टैरेरिज्म (आतंकवादी कृत्य) अब बहुत प्रचलित हो गया है। आतंकवाद, आतंक या आतंकवादी शब्द अपने ही स्वरूप में मिलते–जुलते हैं। इन सब की परिभाषाओं को जानना और विश्लेषण करना इसलिये जरूरी है क्योंकि इसके बिना आतंकवाद के स्वरूप, कारण, प्रभाव और निदान के बारे में सोचना निराधार होगा। ब्लेक लॉ डिक्शनरी के अनुसार यह बल प्रयोग अथवा दबाव बनाने के लिए आतंक का व्यवस्थित उपयोग है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. आतंकवाद का अर्थ, परिभाषा, जानना।
2. आतंकवाद के उदय के कारणों को जानना।
3. आतंकवाद का मानव समाज पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाना।

आतंकवाद :अर्थ एवं परिभाषा

आतंक का शाब्दिक अर्थ है – भय, त्रास या अनिष्ट की पीड़ा। वर्तमान में व्यूह रचना करके नागरिकों को मार डालना, हमले करना और भय का वातावरण बनाना आतंकवाद कहलाता है।

आतंकवादी अमानवीय प्रकृति के निकट स्वार्थी एवं क्रूर होते हैं। उनमें असहनशीलता एवं उग्रता चरम मात्रा में भरी रहती है। इसी स्वभाव के कारण इन्हें उग्रवादी भी कहा जाता है।

कतिपय विचारकों ने आतंकवाद की व्याख्या सामाजिक खतरा उत्पन्न करने में समर्थ कार्य के रूप में की है। रोमानिया के प्रोफेसर शदुलेस्कू के अनुसार आतंकवाद मूलतः सम्पत्ति तथा जीवन को भारी नुकसान पहुंचाने में बम तथा ऐसी ही अन्य युक्तियां अर्थात विस्फोटों के रूप में स्वंय की प्रकट करता है। आतंकवाद के सार तत्व के संबंध में अपनी पुष्टि की व्याख्या करते हुए प्रोफेसर शदुलेस्कू ने कहा कि समाज के सारे राजनीतिक तथा कानूनी संगठनों के हिंसक विध्वंस की पुष्टि से किये गये अतिक्रमण इसमें शामिल होते है।

ब्रियां एम. जेन्किन्स ने आतंकवाद की परिभाषा करते हुए लिखा है कि ''हिंसा की घमकी, व्यक्तिगत हिंसात्मक कृत्य और लोगों को आतंकित करने के उद्देश्य से हिंसा का विचार आतंकवाद है।''

जी. वार्जन बर्गर के अनुसार ''एक आतंकवादी को उसके तात्कालिक लक्ष्य के सन्दर्भ में सर्वश्रेष्ठ तरीके से परिभाषित किया जा सकता है।'' यह लक्ष्य है भय पैदा करने के उद्देश्य से शक्ति का प्रयोग करना और इस प्रकार अपने लक्ष्य की प्राप्ति करना।

कन्वेशन ऑन प्रिवेंशन एण्ड परिशमेन्ट, 1937 द्वारा आतंकवाद को इन शब्दों में परिभाषित किया गया है– ''आतंकवाद का अभिप्राय उन आपराधिक कृत्यों से है जो किसी राज्य के विरूद्ध उन्मुख है और उनका उद्देश्य कुछ खास लोगों या सामान्य जनमानस के मन में भय या आतंक पैदा करना हो।''

राष्ट्र संघ द्वारा इसे परिभाषित करते हुए कहा गया है – ''आतंकवाद एक आपराधिक कार्य है जो राज्य के खिलाफ किया जाता है और इसका उद्देश्य भ्रम पैदा करना है। यह स्थिति कुछ व्यक्तियों, समूहों या जनसामान्य की भी हो सकती है।''

भारत में आतंक विरोधी अधिनियम के अनुसार ''सरकार अथवा लोगों को आतंकित करके विभिन्न वर्गों में वैमनस्य बढ़ाने तथा शान्ति भंग करने के उद्देश्य से बम विस्फोट करने, आग्नेयास्त्रों का प्रयोग करने, सम्पत्ति नष्ट करने, रसायन अथवा रासायनिक अस्त्र इस्तेमाल करने तथा आवश्यक सेवाओं में गड़बड़ी करने के उद्देश्य से जो कार्य किया जाये वो आतंकवादी गतिविधियां है।''

यू.एस.ए. प्रतिरक्षा विभाग की परिभाषा के अनुसार ''समाज या सरकार के खिलाफ गैर कानूनी बल प्रयोग करना या ऐसा न करके केवल धमकी देना ही आतंकवाद है।''

ब्रिटेन के आधुनिक लेखक पाल विल्किंसन ने निम्नलिखित में भेद करना आवश्यक बतलाया है.

1. घरेलू निरंकुशता के विरूद्ध संघर्ष और हिंसा
2. उन विदेशी विजेताओं के विरूद्ध हिंसा जो राष्ट्रों को नष्ट कर देते हैं और नागरिकों को गुलाम बना लेते हैं।
3. जनतान्त्रिक संस्थाओं के विरूद्ध हिंसा जैसा कि नाजियो, फासिस्टों और उनके सहायकों ने किया था।

लियोन जे. बैकर और चार्ल्स ए. रसेल ने आतंकवाद की व्याख्या भय, बल प्रयोग, डांट–डपट के द्वारा राजनीतिक उद्देश्य की सिद्धि के लिए शक्ति अथवा

हिंसा के प्रयोग की धमकी अथवा वास्तविक प्रयोग के रूप में की है।

पाल विल्किंसन ने आतंकवाद की व्याख्या उस नीति अथवा प्रक्रिया के रूप में की है जिसमें तीन मूल तत्व होते है–

1. आतंकवाद को व्यवस्थित शस्त्र के रूप में प्रयोग करने का निर्णय,
2. सामान्य से अधिक हिंसा की धमकी या हिंसक कृत्य,
3. तात्कालिक शिकार और व्यापक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय जनमत पर इस हिंसा का प्रभाव।

प्रो. कारपेत्स ने लिखा है – ''आतंकवाद हत्या, हिंसा प्रयोग, फिरौती या अन्य मांगों के लिए मनुष्यों को बन्धक बनाने और स्वतंत्रता का बलात् अपहरण करने के लिए विशेष संगठन या गुट बनाने की और लक्षित अन्तर्राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय रूप में अभिप्रेरित राष्ट्रीय घटना अथवा अन्य गतिविधि है।''

बेल्जियम के शोधकर्ता फेरिक डेविड ने आतंकवाद कृत्य की परिभाषा इस प्रकार की है – ''राजनैतिक, सामाजिक, दार्शनिक विचारधारात्मक या धार्मिक उद्देश्यों के लिए किया गया कोई भी ऐसा सशस्त्र हिंसक कृत्य जो मानवतावादी कानून के आदेशों का उल्लंघन करता है।''

आतंकवाद की नयी परिभाषा यह है कि आतंकवाद अपने प्रत्यक्ष शिकार से अधिक व्यापक समूह पर मनौवैज्ञानिक प्रभाव डालने हेतु लक्षित हिंसा की धमकी अथवा हिंसा का प्रयोग है।

आतंकवाद : उदय का कारण

किसी भी प्रकार के आतंकवाद, क्रांति या आन्दोलन को किसी कारण–विशेष से संबद्ध कर देना आसान है, लेकिन एक ऐसी प्रतिक्रिया है जो सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक कारणों से ऊहापोह की उपज है। यह जरूरी हो सकता है कि इनका प्रतिशत अलग हो, या विभिन्न स्थितियों में यह प्रतिशत कभी किसी एक कारण के पक्ष में ज्यादा हो तो दूसरी स्थिति या समय में दूसरे पक्ष में। यह भी जरूरी नहीं कि एक देश या क्षेत्र विशेष में आतंकवाद के जो कारण रहे हों, वे दूसरी जगह भी होने से वहां आतंकवाद जन्म ले। अलग–अलग देशों या क्षेत्रों के लोगों की सहनशक्ति, संवेदनाओं और जानकारियों में अन्तर होना स्वाभाविक है। यह भी स्वाभाविक है कि एक ही तरह की परिस्थितियों में विभिन्न मानव समूह भिन्न–भिन्न प्रतिक्रियाएं व्यक्ति करें। कभी–कभी यह भी हो सकता है कि प्रत्यक्ष रूप से किसी कारण के योगदान का हमें पता न लगे, किन्तु अप्रत्यक्ष रूप से वह अन्दर–ही–अन्दर ऐसा काम कर रहा हो जैसा कि परमाणु विस्फोट में होता है।

भारत में विभिन्न जातियां, जनजातियां, धर्म, भाषाएं, इलाकाई समूह आदि होने से भारत में कई ऐसे कारण हैं, जिनसे आतंकवाद जन्मा और पनपा है, जो शायद विश्व में अन्यत्र दिखने को न मिले। मूलतः आतंकवाद का बीज एक छोटे–से कारण के रूप में उगता है और धीरे–धीरे यह बीज एक विशाल विनाषकारी कांटेदार पेड़ का स्वरूप अख्तियार कर लेता है। अतः यह कहना अनुचित नहीं होगा कि मूलतः बदलते परिवेष में आतंकवाद राष्ट्रीय सीमाएं लांघकर आगे चला गया है। इसलिए हम राष्ट्रीय कारणों के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय कारणों की समीक्षा किये बिना किसी निर्णायक स्थिति में नहीं पहुंच सकते।

आर्थिक कारण

जैसे–जैसे मनुष्य तरक्की कर रहा है और विज्ञान पर ज्यादा निर्भर होता जा रहा है, उसकी आवश्यकताएं और आकांक्षाएं बढ़ती जा रही है। आवश्यकताओं की तुलना में धन–सम्पत्ति नहीं बढ़ती और एक असंतोष पनपता है और यह एक बहुत बड़ा कारण बन जाता है, जिसके द्वारा आतंकवाद की उत्पत्ति ही नहीं होती, इसको बढावा भी मिलता है। आधुनिक युग आवागमन के अच्छे साधन उपलब्ध हैं और संचार एवं प्रसारण सस्ते में उपलब्ध हैं, इस कारण लोगों में जानकारी का अभाव नहीं है। लोग टी.वी. आदि देखते हैं और जान जाते हैं कि दूसरे साधन सम्पन्न लोगों की जीवनशैली कैसी है और उसकी अपने साथ तुलना करते हैं। जब वे अपने साधन और सम्पन्नता को उसके नजदीक नहीं पाते हैं तो असंतुष्ट हो जाते हैं और उन्हें पाने की कोशिश करते है। इसके लिए वे गलत रास्ते का भी प्रयोग करने से पीछे नहीं हटते। साथ ही साथ उनके अन्दर ही अन्दर दूसरे वर्गों के लिए एक घृणा–विद्रोह भी जन्म ले लेता है। जाने–अनजाने यह विद्रोह एक ऐसी दिशा ले रहा होता है जो आगे चलकर बड़ी घातक हो जाती है। आर्थिक कारणों को निम्न प्रकार से सूचीबद्ध किया जा सकता है–

1. गरीबी
2. धन–सम्पत्ति के स्वामित्व में भारी अन्तर
3. बेरोजगारी या निम्न रोजगारी
4. एक विशेष इलाके का पिछड़ापन
5. एक सम्प्रदाय, जाति, धर्म समूह आदि का आर्थिक पिछड़ापन,
6. एक विशेष वर्ग का आर्थिक शोषण, जमींदारी प्रथा, बन्धवा मजदूरी आदि।
7. अतिभोगवाद,
8. नकली मुद्रा का प्रचलन,
9. बाहरी आर्थिक मदद का आसानी और अधिकता से मिलना,

10. आर्थिक अपराधों का बढ़ावा, कमजोर, भ्रष्ट और गैर–जिम्मेदाराना न्याय प्रणाली और टैक्स प्रणाली, अनुचित व शिथिल आर्थिक तन्तु,
11. उद्योगों की कमी,
12. अपने कानूनी या गैर–कानूनी धन्धों (हथियारों का बेचना, नशीले पदार्थों की तस्करी आदि) को बढ़ावा देने के लिए राजनीतिक अस्थिरता पैदा करना।

अतः आर्थिक कारण कितने महत्वपूर्ण हैं इनका अन्दाजा हमें हो जाना चाहिए। मानव जाति को आतंकवाद के चंगुल से बचाना है तो हमें भारतीय मूल्यों को पहचानना और अपनी संस्कृति का आदर करना होगा। अषोक के लोक–मंगलकारी आदर्शों को अपनाकर अतिभोगवादी प्रवृत्ति को त्यागना होगा।

राजनैतिक कारण

सभ्यता और मनुष्य के विकास के बाद समाज का जो वर्ग सत्ता के संचालन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में भाग ले रहा था उस वर्ग द्वारा ऐसे वर्ग का हित छिनता जाता रहा जिस वर्ग के लोगों ने इनकी शान–शौकत को बढ़ाने में अपना खून पसीना बहाया– जब इस वर्ग में यह चेतना जागी कि हम राजनेता बना सकते हैं, उन्हें साधन सम्पन्न कर सकते हैं, तो खुद राज क्यों नहीं कर सकते, जिससे उन्हें अभी तक कोसों दूर रखा गया था। बस यही शुरूआत होती है असंतोष की, उससे उपजे संघर्ष की और परिणति होती है, आतंकवाद में। जिस राष्ट्र का राजनैतिक तंत्र मजबूत होता है, भ्रष्टाचार में लिप्त नहीं होता, वह चाहे किसी तरह की शासन प्रणाली में विश्वास रखता हो, वहां आतंकवाद नहीं पनपता। किन्तु तंत्र की कमजोरी यह नहीं देखती कि वहां प्रजातंत्र है या तानाशाही। वहां आतंकवाद के पनपने में देर नहीं होती। आतंकवाद के राजनैतिक कारण इस प्रकार हैं :–

1. विशेष शासन व्यवस्था (प्रजातंत्र, राजतंत्र, तानाशाही),
2. कमजोर, गैर–जिम्मेदाराना, अनुभवहीन, निष्प्रभावी और भ्रष्ट नेतृत्व,
3. राजनैतिक अस्थिरता,
4. राजनैतिक भेदभाव,
5. विकास कार्यों में राजनैतिक दबाव, भेदभाव, हस्तक्षेप और एक क्षेत्र विशेष की अवहेलना,
6. जनआकांक्षाओं के विपरीत एक राजनैतिक तंत्र की स्थापना एवं संचालन,
7. कमजोर और भ्रष्ट सरकारी तंत्र,
8. राजनेता एवं व्यवस्था,
9. अपने राजनैतिक स्वार्थों के लिए राजकीय आतंकवाद प्रचार–प्रसार और रेडियो, टी.वी., साहित्य आदि का गलत उपयोग,
10. सरकार में राजनैतिक इच्छाशक्ति एवं दूरदर्शिता का अभाव,
11. राजनीतिज्ञों और आम आदमी के बीच बढ़ती दूरी,
12. सरकार और राजनेताओं द्वारा छोटी–छोटी समस्याओं और छोटे–छोटे आन्दोलनों की अनदेखी,
13. राजनीति और निजी स्वार्थ की तुलना को देशहित को कम महत्व।
14. कठपुतली सरकारें या भ्रष्ट चुनावी प्रक्रिया से चुनी सरकारें।
15. विदेशी शक्तियों, महाशक्तियों या दुश्मन पड़ोसी देशों द्वारा हस्तक्षेप करना।
16. कुंठाग्रस्त नौजवानों या समूहों को राजनैतिक शरण जो कम पढ़े–लिखे लोगों या बेरोजगार युवकों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है।
17. राजनैतिक और वैचारिक मतभेद।
18. राजनीति का अपराधीकरण और अपराधियों को राजनैतिक शरण एवं शह।
19. प्रजातंत्रिक मूल्यों और अधिकारों के ज्ञान में वृद्धि और राजनैतिक चेतना।
20. अपने तुच्छ राजनैतिक एवं अन्य स्वार्थों की प्राप्ति के लिए हिंसा के प्रयोग को जायज करार देना।
21. विदेशी शक्तियों या पड़ोसी दुश्मन राष्ट्रों द्वारा राजनैतिक अस्थिरता पैदा करना,
22. एक आतंकवादी संगठन का प्रभाव कम करने एवं राजनैतिक फायदें के लिए दूसरे आतंकवादी संगठन को राजनैतिक प्रश्रय और शरण। फलतः एक कमजोर संगठन का बड़ और शक्तिशाली स्वरूप सामने आना।

अगर हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर और पुराने शासकों के विचारों पर ध्यान दें तो उनमें जमीन–आसमान का अन्तर पाऐंगें और स्वतः ही आतंकवाद के राजनैतिक कारणों के निष्कर्ष पर पहुंच जाऐंगें। सम्राट अशोक ने कहा, सभी प्रजा मेरी संतान है। जिस प्रकार मैं चाहता हूं कि मेरी संतति इस लोक और परलोक में सब प्रकार की समृद्धि तथा सुख भोगे, ठीक उसी प्रकार मैं अपनी प्रजा की सुख–समृद्धि की कामना करता हूं।

सामाजिक कारण

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं। समाज और आसपास के सामाजिक परिवेश का उस पर प्रभाव पड़ना लाजमी है। सामाजिक मूल्यों में गिरावट, सामाजिक संस्थाओं का विघटन, वैज्ञानिक प्रगति के कारण पनपता सामाजिक प्रदूषण आदि ऐसे तत्व हैं जो मनुष्य ही हिंसक प्रवृति पर विराम लगाने की बजाय उन्हे बढ़ावा देते हैं और प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से ये आतंकवाद के बीज उगा देते है, और फिर उन्हें बढ़ावा देने में भी मददगार साबित होते हैं। कुछ सामाजिक कारण निम्नलिखित है–

1. सामाजिक मूल्यों का गिरना और नैतिक शिक्षा का अभाव।

2. अमीरी व गरीबी में दिन–ब–दिन बढ़ती खाई।
3. वैज्ञानिक प्रगति और भौतिकता की ओर अग्रसर युवा वर्ग।
4. शहरीकरण और अपराधियों के छिपने के पर्याप्त एवं सुरक्षित स्थान।
5. समाज में अपराधियों और अपराधों की अनदेखी करने की प्रवृति, अपराधियों का डर और सामाजिक चेतना का अभाव।
6. शिक्षा का विस्तार एवं अशिक्षा, दोनो की अलग–अलग तरह से आतंकवाद को सहयोग देते है।
7. आवागमन के तीव्र उपलब्ध साधन, संचार–माध्यमों द्वारा सूचनाओं का समाज के बीचों–बीच तीव्रता से पहुंचने की सुविधा।
8. धार्मिक कट्टरता से जुड़ी सामाजिक मान्यताएं और एक लिंग/वर्ग–विशेष की अशिक्षा को सामाजिक मान्यता।
9. खराब शिक्षा–प्रणाली जिसमें राष्ट्र–भक्ति, नैतिकता और सामाजिक मूल्यों की शिक्षा की अनदेखी की जाती है।
10. संयुक्त परिवारों का टूटना, बुजुर्गों और उनकी नैतिक बातों की अनदेखी, सामाजिक अनुशासनहीनता।
11. बेरोजगार युवकों को सामाजिक संरक्षण प्राप्त न होना, सरकारी नौकरियों के लिए भागदौड़ और युवकों की भावनाओं की अवहेलना।
12. सरकार और सरकारी तंत्र द्वारा बुनियादी सामाजिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने की अक्षमता।
13. बुद्धिजीवी व अभिजात्य वर्गों में हताषा एवं मोहभंग की स्थिति।
14. वर्ण–व्यवस्था एवं छुआछूत।

भारतीय संदर्भ में सामाजिक असमानता आतंकवाद के विस्तार में एक बड़ा कारण है। लेखक एवं विचारक श्री सरयू प्रसाद ने अपनी पुस्तक में लिख हैं जन्म–संस्कार और कर्म पर आधारित वर्ण–व्यवस्था समाज को ऊंचे और निचले तबकों में बांटकर रखने तथा लोगों के अलग–अलग सामाजिक दर्जे को बरकरार रखने के लिए पोषित की जा रही थी। सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात थी छुआछुत जिसके चलते शूद्र को आदमी का दर्जा हासिल नहीं था।

मनोवैज्ञानिक कारण

आतंकवाद का अपना एक मनोविज्ञान है। एक विशेष प्रकार की मनोवृति वाला व्यक्ति ही हिंसक होता है, आतंकवादी बन सकता है और हिंसा को अपने लक्ष्यों की पूर्ति के लिए जायज करार दे सकता है। इस विषय में वर्णित तमाम कारण किसी–न–किसी स्वरूप में, छोटे–बड़े रूप में, हर समाज, देश या क्षेत्र में मौजूद होंगे, फिर भी हर जगह आतंकवाद नहीं है या हर मनुष्य आतंकवादी नहीं बन जाता, क्यों ? उत्तर स्पष्ट है कि जब तक एक विशेष प्रकार का मनोवैज्ञानिक वातावरण उपलब्ध नहीं होता, आतंकवाद नहीं पनपता।

मनोवैज्ञानिक कारण इस प्रकार हैं–

1. स्वतंत्र होने की इच्छा, बलपूर्वक गुलाम बनाए गए राष्ट्रों में राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न होना।
2. राष्ट्रीय एकता की कमी।
3. उपराष्ट्रीयता।
4. किसी क्षेत्र, भाषा, धर्म–विशेष आदि की अनदेखी के कारण पनपते असंतोष से नए राष्ट्र की कल्पना।
5. किसी राष्ट्र या क्षेत्र में धर्म अथवा जाति के आधार पर जनसंख्या का असंतुलन।
6. कट्टरतावाद।
7. नायक कहलाने अथवा प्रचार पाने की आकांक्षा।
8. डर का मनोविज्ञान।
9. भीड़ का मनोविज्ञान।
10. अपराधिक प्रवृति और भावनात्मक प्रवृति की कमी।
11. आतंकवादियों में तीव्र भवनात्मक महत्वाकांक्षाएं।
12. तीव्र मनोवैज्ञानिक उत्प्रेरणा प्राप्त आत्मघाती दस्ते।
13. मनोवैज्ञानिक अथवा भावनात्मक अलगाव की भावना।
14. आतंकवादियों द्वारा अपने कार्य को एक पवित्र कार्य के तौर पर पेश करना और जनता का उसे मान लेना।
15. जनमत की शक्ति पीछे होने का मनोविज्ञान उन्हें व्यक्तिगत तौर पर अपनी कार्यवाही करने, कष्ट उठाने, लोगों को कष्ट देने और मरने और मारने की शक्ति देता है।
16. हिंसा को सही और अन्तिम रास्ता बताना।
17. एक आन्दोलन के पीछे का जनमत, उसकी प्रेस में चर्चा तथा अच्छा और प्रभावशाली नेतृत्व ऐसे कारण हैं जो इसे चर्चित करने के साथ–साथ देश और विदेश में कुछ ऐसे समूह इकट्ठे कर देते है जो एक आंदोलन–विशेष का समर्थन करने लगते है।
18. अफवाहें और उन पर विश्वास।
19. प्रेस की भूमिका एवं गलत प्रचार–प्रसार का आम लोगों पर मनोवैज्ञानिक असर और विश्व–जनमत का धीरे–धीरे बनना।
20. आतंकवादी में ऐतिहासिक प्रेरणा, विजय की भावना और उसके विपरीत सैन्य बलों और प्रशासन में पराजय की भावना पनपना।

धार्मिक कारण

यह बड़ी गहरी मान्यता है कि मानव–जाति धर्मरहित होती तो शायद बड़े स्तर के संघर्ष नहीं होते या फिर बहुत कम होते। विश्व–इतिहास गवाह है कि धार्मिक द्वेष के कारण विश्व में अनेक बड़े–बड़े युद्ध हुए और हो

रहे है। चाहे महमूद गजनबी और मुहम्मद गौरी के द्वारा किया गया विध्वंस और दुष्प्रचार हो या अफगानिस्तान में बौद्ध प्रतिमाओं को तोड़ा जाना हो, मानव की उस सोच को जाहिर करता है जिस पर समय अपना असर न डाल सका। जो मनोवृति हजारों साल पहले रही, वो आज भी मौजूद है। धर्म का नाम लेकर लोगों को एक सूत्र में बांधना शायद–सबसे आसान काम है। न कोई तर्क–वितर्क, न कोई विचार–विमर्श, बस धर्म का नाम लीजिए और उसकी आड़ में कुछ जायज या नाजायज करते रहिए। कुछ धर्म–विशेष इस काम के लिए इतने बदनाम हो गए हैं कि धर्म के साथ जितनी नैतिकता और अंहिसा को जोड़ा जाना चाहिए, उसके विरूद्ध उन्हे हिंसा, अनैतिकता और आतंकवाद से जोड़ा जाने लगा है। आज विश्व आतंकवाद के जिस दौर से गुजर रहा है उसमें सबसे बड़ा कारण धर्म है। धर्म एक ऐसी चीज है जिसके क्षेत्र, राष्ट्र, जाति, भाषा आदि की सभी सीमाएं तोड़कर आतंकवाद को एक नया आयाम दिया हैं, यानि इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया हैं। आज आतंकवादियों के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन हैं जो धर्म के नाम पर लोगों को एक स्वर में बोलने को कहते हैं और विश्व में कहीं भी धर्म के नाम पर अपनी कार्यवाही को अंजाम देने में सक्षम हैं। साथ ही जिसने इनका विरोध किया वे चाहे विश्व में कहीं भी हों, इनके दुश्मन बन जाते है।

आतंकवाद के चन्द धार्मिक कारण

1. धार्मिक कट्टरवाद।
2. धर्म का अधूरा ज्ञान और उसकी शिक्षा को तोड़–मरोड़कर आम आदमी तक पहुंचना।
3. अपने धर्म को सर्वोपरि बताना और गलत तरीकों से उसका प्रसार–प्रचार करना।
4. अनैतिक कार्यों को धर्मयुद्ध का नाम लेकर करना।
5. वास्तविक अर्थों में धर्मनिरपेक्ष राजनीतिज्ञों, क्षेत्रों और राष्ट्रों का अभाव।
6. धर्म और राजनीति का गठजोड़ स्थापित करना और वोट बैंक स्थापित करना।
7. धर्म–विशेष के अल्पमत में होने पर उसकी अवहेलना।
8. धर्मगुरूओं, पादरियों या मुल्लाओं का वर्चस्व और उनके द्वारा गलत शिक्षा। इनके द्वारा धर्मयुद्ध, जिहाद, होली वार आदि की शिक्षा और हिंसा को इसके लिए जायज ठहराने की प्रवृति।
9. व्यक्तिगत फायदों एवं राजनैतिक स्वार्थों के लिए धर्म का उपयोग।
10. धार्मिक स्थानों का कट्टरता फैलाने में उपयोग।
11. राष्ट्र की तुलना में धर्म को ज्यादा महत्व देना।
12. धार्मिक स्थानों का आतंकवादियों द्वारा शरण स्थल के तौर पर उपयोग और सैन्य बलों की इन स्थलों पर कार्यवाही करने की सीमाएं।
13. धार्मिक स्थलों पर बेरोकटोक विस्तार और इन्हे रोकने के लिए कानूनों का न होना, कानून होने पर भी प्रशासन द्वारा उनका सख्ती से पालन न करवाना।
14. जन–भावनाओं के चलते धार्मिक मामलों में सरकार और प्रशासन की नगण्य भूमिका।

सैन्य कारण

अलग से एक कारण के रूप में सैन्य बलों को कटघरे में खड़ा करने के लिए अलग–अलग मत हो सकते है। आज तब आतंकवाद का एक विश्वव्यापी स्वरूप हमारे सामने है तो इस कारण की अनदेखी नहीं की जा सकती। कई जगह देखा जाये तो एक छोटे से आन्दोलन या संघर्ष को सैन्य बलों द्वारा गलत ढंग से सम्भालने के कारण उसका प्रभाव क्षेत्र बढ़ता चला गया। भावनाओं को समझे बिना जितना कुचलने की कोशिश की गई, उतनी ही ज्यादा वो भावनाएं भड़की और एक बड़ी समस्या बन गई। वैसे भी यह समझना जरूरी है कि सैन्य बलों के हवाले किया गया कोई भी क्षेत्र इतना ज्यादा ग्रसित हो चुका होता है कि उनके द्वारा की गई छोटी–सी गलती को भी एक बड़ी घटना के रूप में आतंकवादी, उसके नेता और प्रेस वाले पेश करते है। आतंकवाद ग्रसित इलाके में लोगों को भ्रमित करना और भड़काना बड़ा आसान होता है – किन्तु इस पक्ष का समर्थन करने के साथ–साथ इस बात को भी नहीं नकारा जा सकता कि सैन्य बलों द्वारा मानवाधिकारों का पालन न करना और हर आम आदमी को आतंकवादी की श्रेणी में खड़ा कर उसके साथ सख्त व्यवहार करना आग में घी का काम करता है। कुछेक सैन्य कारण इस प्रकार है–

1. सैन्य बलों पर राजनैतिक प्रभाव।
2. सैन्य बलों को अपना काम करने की स्वतंत्रता में कमी।
3. मानवाधिकारों का ज्ञान न होना और इनका बड़े पैमाने पर हनन।
4. सैन्य बलों, पुलिस और समाज प्रशासन में तालमेल की कमी।
5. सैन्य बलों द्वारा मानवाधिकारों के हनन को छिपाना और उनके अपराधों पर पर्दा डालना।
6. सैन्य बलों द्वारा आम आदमी का शोषण और अनैतिक कार्यवाहियां।
7. आतंकवादियों द्वारा सैन्य बलों के परिवारों को निशाना बनाना और उन पर हर उचित कार्यवाही को भी आतंकवादी संगठनों और प्रेस द्वारा दुष्प्रचारित करना। फलतः सैन्य बलों में बदले और द्वेष की भावनाओं का पनपना।
8. लम्बे खिंचते आन्दोलनों के कारण सैन्य बलों में मानसिक एवं शारीरिक थकान।

9. सैन्य बलों और आतंकवादियों द्वारा एक–दूसरे के विरूद्ध की गई कार्यवाहियां तथा इस क्रम का न रूकना।
10. सैन्य बलों की असंतुलित एप्रोच, शक्ति से ज्यादा काम करना और सिविक एक्शन का कम ध्यान देना।

अन्त में कहा जा सकता है कि आतंकवाद किसी एक कारण से जन्म जरूर ले सकता है किन्तु समस्या तब खड़ी होती है जब प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कई छोटे–बड़े कारण जुड़ जाते है। अगर एक स्थापित व्यवस्था में मनुष्य को मनुष्य की तरह रहने का अधिकार मिले, उसे अपने जीवनयापन के लिए मूलभूत सुविधाएं प्राप्त हों और सबको सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक तौर पर बराबर का दर्जा प्राप्त हो तो आतंकवाद का जड़ जमाना मुश्किल हो जाएगा।

आतंकवाद : मानव समाज पर प्रभाव

आतंकवाद के प्रभाव की तुलना अगर एक आणविक विस्फोट से की जाए तो अनुचित नहीं होगा। जिस तरह हीरोशिमा और नागाशाकी पर बम गिराए जाने के बाद न केवल मनुष्य जाति प्रभावित हुई बल्कि जीव–जन्तु, पेड़–पौधे और पूरा पर्यावरण प्रभावित हुआ तथा वर्तमान के साथ–साथ भविष्य भी प्रभावित हुआ। आज किसी भी क्षेत्र की कल्पना कीजिए तो हम पाएंगे कि वो क्षेत्र आतंकवाद से प्रभावित है। इसके प्रभाव से भौतिक चीजों के अलावा व्यक्ति की मानसिकता भी प्रभावित होने लगती है जैसा कि आज समाज में हो रहा हैं। एक आम नागरिक का अपनी व्यवस्था, सरकार, सैन्य बलों और यहां तक कि अपने आप पर से विश्वास उठ गया है और वह इस तरह के प्रश्न पूछने लगा है– क्या हम स्वतंत्र है ? क्या हम मानव हैं या कीड़े–मकोड़े ? आदि–आदि। आज आम व्यक्ति आतंकवाद से इतना त्रस्त हो चुका हो कि उसे आतंकवाद और आतंकवादी का वर्चस्व ही सर्वत्र नजर आए तो वह और क्या सोचेगा ? आतंकवाद का प्रभाव इतना व्यापक हैं कि वो प्रत्यक्ष रूप से और वर्तमान में चाहे हमें नजर न आए लेकिन वो उस दीमक की तरह है जो अंदर ही अंदर एक अच्छे खासे और विशाल पेड़ को खोखला करती चली जाती हैं, उसकी पतियां भी हरी–भरी रहती है और हमें पता भी नहीं लगता कि क्या हो रहा है। एक हवा के झोंके की जरूरत है और पूरा का पूरा पेड़ जमीन पर ताश के पतों की तरह ढह जाता है। आतंकवाद 'एक रूग्ण सोच' है और अब यह मानव जाति की स्थायी रूग्णता में परिवर्तित करती जा रही है। अभी तक विनाश लीला में सबसे ऊपर विश्व युद्धों का नाम लिया जाता था। नागासाकी और हिरोशिमा के उदाहरण दिए जाते थे पर आज मानव जाति पर आतंकवाद हर पल एक नागासाकी और हिरोशिमा के रूप में खतरा मंडरा रहा है। हर देश इससे प्रभावित है इसका प्रभाव उस बीमारी की तरह इतना बढ़ गया हैं जिस पर दवाइयों का असर नहीं होता बल्कि वा दवाइयां ही ऐसे प्रभावित हो जाती है कि उनका प्रतिकूल प्रभाव होने लगता है। जिस समाज की प्रतिरोधक शक्ति ही समाप्त हो जाए तो बीमारी के लिए दिए जाने वाले टीके भी वहां निष्प्रभावी हो जाते है।

भिन्न–भिन्न क्षेत्रों पर आतंकवाद के प्रभाव की विवेचना–

सामाजिक क्षेत्रों में प्रभाव

इस धरती पर कुछ भी हो समाज को उसका अच्छा–बुरा परिणाम भुगतना पड़ता है क्योंकि जो हो रहा है वो समाज में ही हो रहा है और समाज के लिए लोगों द्वारा किया जा रहा हैं। एक समाज में आतंकवाद के पैदा होने और जड़ जमा लेने के बाद वहां पर एक सामाजिक असुरक्षा भी भावना पनपती है। विघटनकारी ताकतें अपना सिर उठाने लगती हैं, युवा जगत बिना सोचे समझे हिंसक रास्ते अख्तियार करने लगता हैं और अपने मूल उद्देश्यों से भटक जाता हैं। भारतीय परिवेश में जहां पर विभिन्न धर्म, जातियां, भाषाएं आदि है और इतने विशाल देश की भौगोलिक स्थिति भी अलग–अलग प्रकार की हैं, आतंकवाद का प्रभाव बहुत ही विस्फोटक है। आतंकवाद का सहारा लेकर चंद गिने–चुने लोग बाहरी शक्तियां एक वर्ग विशेष को बहला–फुसला कर, उन्हें सहायता देकर और अपने घर में बैठे ही हमारे घर में रिमोट कंट्रोल से आग लगा सकती है। एक आर सामाजिक वैमनस्य घर कर गया, रिश्तों में दरारें पड़ गई और एक–दूसरे के लिए दोस्ती का जज्बा खत्म हो गया तो समझिये उस राष्ट्र के अस्तित्व की उल्टी गिनती शुरू हो गई। रूस के विघटन में कुछ ऐसी ही दरारें थीं जिन्हें समय रहते नहीं देखा गया और वे इसे आज भी भुगत रहे हैं।

आम समाजीकरण में जो चार बातें अड़चन डालती है उनमें अगर व्यक्ति की अपनी शारीरिक अक्षमता को छोड़ दिया जाए तो बाकी की तीन बातें ऐसी हैं जिनका संबंध समाज से है। ये हैं असंतुलित सामाजिक संरचना, नई सांस्कृतिक मान्यताओं की अवहेलना और पुरानी घिसी–पिटी परंम्पराओं पर जो आतंकवादी सामाजिक संरचना को असंतुलित करते हैं, विशेषकर धर्मान्ध कट्टरपंथी आतंकवादी जो सामान्य सामाजिक विकास में बाधक होते है।

समाज और मानवाधिकार का एक गहरा संबंध है। आतंकवाद जहां एक ओर बड़े पैमाने पर मानव अधिकारों का हनन करता हैं वहीं दूसरी ओर अन्य लोगों को भी इस हनन का भागीदार बनाता है। महिलाओं की स्वतंत्रता और शिक्षा पर पाबंदी, एक धर्म विशेष से घृणा, आम आदमी के सम्मान और जीने के अधिकार से खिलवाड़, बच्चों को आतंकवादी बनाकर उनकी आयु सीमित कर देना, निर्दोष लोगों पर ज्यादतियां आदि ऐसे

कृत्य है जिनसे बड़े पैमाने पर मानवाधिकारों का हनन होता हैं और जो परिस्थितियां बनती हैं वो समाज के सामान्य विकास को अवरूद्ध करने के साथ–साथ हमें प्रतिकूलता की स्थिति में फैंक देती हैं।

समाज कुछ संस्थाओं और गतिविधियों से नियंत्रित और अनुशासित रहता हैं और विकास करता हैं। इनमें धर्म, कानून और व्यवस्था, आम सहमति, शिक्षा, कला नेतृत्व, मनोरंजन और खेलकूद प्रमुख है। आतंकवाद एक ऐसी विचारधारा है जो इन तमाम संस्थाओं में सेंध लगाकर इन्हे खोखला कर रही है। अफगानिस्तान में वर्षो शिक्षण संस्थाएं बंद रही, चेचन्या में आज भी मनोरंजन गृह और खेल–कूद नहीं हो रहे है, कश्मीर में कई स्थान ऐसे है जहां की शिक्षण संस्थाएं छावनियों में तब्दील हो चुकी हैं, इराक में कोई कानून व्यवस्था नाम की चीज नहीं आदि सैकड़ों ऐसे उदाहरण हैं जिनमें आतंकवाद का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।

विश्व का कोई भी कोना हो, रूस हो या अफगानिस्तान, फिलिस्तीन हो या इजराइल, भारत का कश्मीर हो, पंजाब हो या उत्तर पूर्व, आतंकवाद का सबसे प्रतिकूल प्रभाव हमारे उन युवाओं की शिक्षा पर पड़ता है जो किसी देश के कर्णधार है। अपनी कच्ची उम्र में जिन्हें अपनी शिक्षा पर सबसे ज्यादा ध्यान देना चाहिए वो अगर अपराध जगत से जुड़ जाएं, हिंसा में विश्वास करने लग जाए, हाथ में कलम की जगह बंदूकें पकड़ लें, खेल–कूद की बजाय राजनीति की चापलूसियां सीखने की कोशिश करें तो समझ लीजिए वो अपने और अपने समाज के भविष्य के लिए चिंतित नहीं है। आतंकवाद पनपने के बाद युवा वर्ग उपरोक्त सभी व्याधियों से ग्रस्त हो जाता है।

अतः संक्षेप में कहा जाता है कि आज समाज एक दोराहे पर खड़ा हैं जहां उसे निर्णय लेना है कि या तो वो आतंकवाद के सामने आत्मसमर्पण कर इंसान और युवाओं कें सपनों को टूटकर बिखर जाने दे या फिर जीवन के उच्चतर आदर्शों और मान–मर्यादाओं की खातिर एक ऐसी दीवार बनकर खड़ा हो जाए कि आतंकवाद का प्रभाव समाज पर न हो और उसका भविष्य सुरक्षित रहे।

राजनैतिक क्षेत्रों पर प्रभाव

आतंकवाद एक हिंसा की रणनीति जरूर है पर उसके मूल में एक स्पष्ट राजनैतिक उद्देश्य पल रहा होता हैं। आतंकवादी एक स्थापित व्यवस्था को उखाड़ फेंकना चाहता है। उसका संघर्ष राजनैतिक है पर कृत्य हिंसात्मक। यह एक विद्रोह के अस्त्र के रूप में जरूर प्रारंभ होता हैं पर इसकी नजरें उन राजनीति के गलियारों पर होती हैं जहां वो अपनी हुकूमत अपने ढंग से और अपने कायदे कानूनों से चला सकें। आतंकवाद का प्रभाव आंतरिक एवं बाह्य दोनों राजनैतिक क्षेत्रों में देखा जा सकता हैं। आतंकवाद को एक विचारधारा की संज्ञा दी जाती है पर यह अब अपने आप में एक व्यवस्था बनती जा रही है। इसका कार्यक्षेत्र इतना व्यापक हैं कि दुनिया की सारी व्यवस्थाएं एक होकर भी इसका मुकाबला नहीं कर पा रही है। राष्ट्रों की सीमाएं है, यह असीमित है, तंत्रों के कायदे–कानून और मर्यादाएं है, यह इन सबसे परहेज करता है। जिस तरह से विश्व में व्यवसायिक तरीकों से आतंकवाद का राजपाट चला रहा हैं उससे आने वाला भविष्य आतंकवाद को आयात–निर्यात की वस्तु बना देगा। छोटे स्तर पर दूसरे देशों में भाड़े के सैनिक भेजना आदि तो पहले ही शुरू हो रखा हैं और राजनीति में बाकायदा इनकी सीट आरक्षित होने लगी है।

आतंकवाद का राजनीतिज्ञों के बीच गुप्त और अलिखित समझौते और संधियों में निहित है। जहां एक और ऐसे राजनैतिक दल होते है। जो एक विशेष विचारधारा, धर्म या इलाके से संबंध रखते हैं और उनके विभिन्न मतभेद भी सताधारी एवं अन्य दलों से होते है। आतंकवादी ऐसे दलों का लाभ उठाते है तो राजनैतिक दल भी आतंकवादियों का फायदा उठाने से नहीं चूकते। जहां–जहां मसल पावर की जरूरत होती रहती है इन्हें आगे किया जा सकता है। अगर ऐसे दल सता के गलियारों पर पहुंच गए तो आतंकवाादियों की शक्ति असीमित हो जाएगी। देश–विदेश में ऐसे अनेकों उदाहरण मौजूद हैं जहां पूर्व के आतंकवादी आज के राजनेता बन गए। कभी–कभी राजनेताओं की सांठ–गांठ और यहां तक कि आतंकवादी गतिविधियों से उनका सीधा–सीधा संबंध उजागर हुआ और उन्हें अपने पदों से हाथ भी धोना पड़ा है।

आज प्रजातंत्र में आतंकवादियों के बढ़ते प्रभाव से इस व्यवस्था पर लोग उंगलियां उठाने लगते है और इसे कमजोर व्यवस्था की संज्ञा देने से भी नहीं चूकते। उसी तरह से किस देश विशेष का कानून और न्याय पालिका, जो आम हालातों में एक आदर्श व्यवस्था हो सकती है, आतंकवाद से पीड़ित होने पर अपना रवैया बदल देती है, कठोर कानूनों की वकालत की जाने लगती है मानवाधिकारों के सम्मान के साथ–साथ उन्हे आतंकवादियों के लिए सीमित करने की पेशकश होने लगती हैं और नई विचारधाराएं, (जो मानव हित में नहीं) चर्चा में आ जाती है।

अंत में इतना ही कहना उचित होगा कि हर राष्ट्र की अपनी शासन प्रणालियां और तंत्र होते हैं जिन्हें वहां मान्यता प्राप्त होती है। यदि आतंकवाद राजनीति को इतना प्रभावित करे कि तानाशाही और मार्शल लॉ जैसी व्यवस्थाओं की वकालत होने लगे, आम नागरिक लाचारी से उसे सहते रहें और विदेशी राष्ट्र एवं महाशक्तियां उन्हें अपने स्वार्थों के लिए मान्यता प्रदान कर दे तो जीत

मानवाधिकारों और जन तंत्र की नहीं बल्कि आतंकवाद की होगी।

आतंकवाद का धर्म पर प्रभाव

समाज और धर्म अभिन्न है। यह एक–दूसरे से ऐसे संबद्ध है, दोनों का प्रतिबिम्ब एक–दूसरे में दिखाई देता हैं। धर्म कोई भी हो पवित्र होता है और उसका प्रभाव जीवन के हर क्षेत्र में देखा जा सकता है। आम तौर पर इसकी पवित्रता उसे आतंकवाद जैसी घृणित सोच से बहुत दूर रखती है पर आतंकवादी जिस तरह धर्म का उपयोग अपने लाभ के लिए कर रहे हैं उससे धर्म और धार्मिक मान्यताएं प्रदूषित और प्रभावित हो रही है, उसे मानने वाले प्रभावित हो रहे हैं, धर्म की नई परिभाषाएं दी जा रही है, उसे नए क्षेत्रों से जोड़ा जा रहा हैं। पहले भी राजनैतिक पैदाइश है, राजनीति के धर्म का उपयोग नहीं करता, धार्मिक राजनीति करता है फलतः यहां भी भीड़ का मनोविज्ञान हावी हो जाता है, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दे दरकिनार कर दिए जाते है और धर्म को मुद्दा बना दिया जाता है। इसी से जुड़ा हुआ है सांप्रदायिक दंगों का भविष्य। पूर्व में ऐसे दंगे किसी छोटी–सी बात से स्थानीय स्तर पर शुरू होकर फैलते थे पर अब इस तरह के दंगे आतंकवादियों द्वारा कराए जाते हैं और फिर उनका खूब प्रचार कर उनसे फायदा उठाना आम चलन हो गया हैं।

आतंकवाद ग्रसित क्षेत्रों में धार्मिक नेताओं और कट्टरपंथियों का प्रभाव स्वतः ही होता है जो देश–विदेश में बढ़ता जाता है। शिक्षा और ज्ञान के अभाव में लोग इनके कुप्रचार और दकियानूसी दलीली को खूब सुनते हैं और मानने लगते है। इसके बाद की स्थिति और विस्फोटक हो जाती है जब यह लोग राजनीति को प्रभावित करने के साथ–साथ स्वयं भी राजनेता बन बैठता हैं। इन नए प्रयोगों और समीकरणों से विकास एवं मानवता सीधे–सीधे प्रभावित होते हैं।

आतंकवाद का पर्यावरण पर प्रभाव

आतंकवाद मानव जाति का सबसे बड़ा दुश्मन बनकर उभरा है। इससे मानव समाज ने जितनी पीड़ा भोगी है वह वास्तव में हृदय विदारक तो है किन्तु पर्यावरण भी इससे अछूता नहीं। पर्यावरण को भी आतंकवाद के दुष्परिणाम मानव जाति की भांति ही भोगने पड़े हैं। चाहे स्वच्छ झरने हो, जंगल हिमाच्छादित पर्वत चोटिंया, सभी के नैसर्गिक स्वरूप में आतंकवाद ने विकृति पैदा कर दी है। आतंकवादी अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए जितने भी साधन काम में लाते है उनका प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव पर्यावरण सहन करता है।

आतंकवादी कोई भी कार्य करें लेकिन स्वयं को सेना और खुफिया तंत्र की निगाहों से बचाकर रखना चाहते हैं। अपनी शक्ति बढ़ाने के उद्देश्य से ये अपने लिए सुरक्षित स्थान तलाशते है और जंगलों से बढ़कर सुरक्षित स्थान कोई नहीं हो सकता। जंगल दो मुंही तलवार की तरह है, यह न केवल छुपाव उपलब्ध कराते है। बल्कि सुरक्षा बलों के लिए ऑपरेशनों में भारी दिक्कतें भी पैदा करते है। भारत में असम और कश्मीर में आतंकवादियों की सफलताएं इसका उदाहरण है। आतंकवादी जंगलों में अपना प्रशिक्षण शिविर चलाने के लिए जंगलों की अंधाधुंध कटाई करते है, वन संपदा का निहित स्वार्थों के लिए दोहन करते है। उत्तर–पूर्व और कश्मीर में जंगलों की अवैध कटाई आतंकवादियों की आय का भी एक जरिया है। एक तरफ आतंकवादियों को लकड़ी से कमाई मिलती है तो दूसरी तरफ सरकार की आमदनी में कमी होती है। जहां सरकारी कटाई में औषधीय गुण वाले तथा अन्य बहुमूल्य पेड़ों को ध्यान रखा जाता है वहीं आतंकवादी केवल अपने स्वार्थों के खातिर अंधाधुंध कटाई करने में विश्वास रखते है।

आतंकवाद से वायु भी प्रदूषित होती है। वर्तमान समय में आतंकवाद जिस गति से बढ रहा है– ऐसा लगता है जैसे फांसीवाद और नाजीवाद का एक नए रूप में आगमन हुआ हो। हिटलर और मुसोलिनी ने जैसे विश्व को 'द्वितीय विश्वयुद्ध' में झोंका उसी तरह आज मुल्ला उमर सरीखे आतंकवादी फिर से एक विश्वयुद्ध का वातावरण तैयार कर रहे है। ओसामा के अल–कायदा संगठन ने अमेरिकी वर्ल्ड ट्रेड सेंटर एवं पेंटागन पर आतंकी हमले कर निर्दोष मानवों का ही खून नहीं बहाया बल्कि हजारों लीटर पेट्रोल जलाकर वायु प्रदूषण फैलाया। बात यहीं खत्म नहीं होती, पर्यावरण को उससे भी बड़ा नुकसान तब हुआ जब प्रतिक्रिया स्वरूप अमेरिका ने अफगानिस्तान और फिर इराक पर हमला किया। बारूदी धमाकों और प्रकृति के बहुमूल्य उपहार ईंधन का उपयोग मानवता और पर्यावरण को खराब करने में प्रयुक्त हुआ। जो कसर बची उसे तेल के कुओं में आग लगाकर पूरी की गई।

नाभिकीय, जैविक और रासायनिक हथियारों का आतंकवादियों द्वारा उपयोग भी पर्यावरण को प्रभावित करता है। आज का आतंकवादी पायलेट, डॉक्टर और वैज्ञानिक हो सकता है, वह विनाश के अभिनव प्रयोग करता है। पहले उसने आत्मघाती दस्ते तैयार किए और अब विमानन आतंकवाद का उदाहरण अमेरिका पर हुए हमलों को ले सकते है। इसमें कोई दो राय नहीं कि वह भविष्य में जैविक और रासायनिक हथियारों का भी प्रयोग कर सकता है। आतंकवादी को अपना उद्देश्य प्राप्त करने के लिए किसी भी हद तक गुजर जाना स्वीकार हैं। 'महाविनाश के हथियार' यदि मानवता के इन दुश्मनों के हाथों लगे तो कितना विनाश होगा। वर्तमान में जो घाव लगेंगे वो सदियों तक रिसेंगे, प्रत्यक्ष में कुछ लाख लाशें होगी पर पर्यावरण को होने वाले नुकसान को करोड़ों

भुगतेंगे। वियतनाम इसका साक्ष्य है। यह कहा जा सकता है कि आतंकवाद जिस गति से फैल रहा हैं उतनी ही गति से यह पर्यावरण को प्रभावित कर रहा है। चाहे वो पहाड़ियों और जंगलों में फैला कचरा और प्लास्टिक हो, जल स्रोतों को रासायनिक हथियारों से विषाक्त होने का डर या जैविक हथियारों द्वारा फैलाई गई महामारियां, यह सब सौर मण्डल के सबसे जीवंत और सुंदर ग्रह को नष्ट करने की साजिश है।

निष्कर्ष

आतंकवाद के विस्तृत प्रभाव क्षेत्र के निष्कर्ष में हम कह सकते है कि आज का सवेरा मंदिरों से आती शंखो की ध्वनियों और मस्जिदों से आती आजानों से नही गुंजता। यह गूंजता है कर्कश और दिल दहलाने वाले बमों के धमाकों और गोलियों की टक–डम, टक–डम से। आज की शामें मंदिर की आरतियों और दीपकों की लौ की बजाय घरों, खेतों, जंगलों में लगी आग या पेरा–बमों से प्रकाशमान होती है। विश्व का कोई कोना, व्यक्ति और यहां तक कि जीव–जन्तु और पेड़–पौधें भी आतंकवाद के दुष्प्रभाव से अछूते नहीं रहे हैं। केवल युद्ध का न होना ही शांति और सुरक्षा नहीं है। इसके मायने मानवता की जड़ों में है। उस मानव अस्तित्व का क्या लाभ जिसमें आदमी जिंदा लाश की तरह दिन गुजार रहा है। भूखमरी, गरीबी और अत्याचार का शिकार हो रहा है। जब तक राष्ट्रीय सीमाओं को तोड़कर अन्तर्राष्ट्रीय पहल नहीं जाती तब तक आतंकवाद तो जिंदा रहेगा। यह तूफान इतना प्रलयंकारी न हो जाए कि मानवता को ही निगल जाए। अतः आज आवश्यकता है कि मानवाधिकारों को एक जुट होकर सख्ती से अमल में लाया जाए। आतंकवाद के कुप्रभावों को ने सिर्फ नकारने की जरूरत है बल्कि मानवता के इस दुश्मन का सर्वनाश ही सर्वहित में होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

G Goppa Kumar : "International Terrorism and Global Orde in the Twenty First Century:, Kanishka, New Delhi, 2003

G.B. Reddy : "Nation in Crisis: Dimensions of National Security and Terroism", Authors Press, Delhi, 2001

Gert W Kueck,: "Terrism in South Asia : Impact on Development and Democratic Sridar K KhatriProcess." Shipra, Delhi, 2003.

Girdhari Sharma: "International Terrorism", APH, New Delhi, 2002.

M G Chitkara Himanshu Bourai : "Global Poverty Terrorism and Peace : Gandhian Perspective", Mittal, New Delhi, 2005..

M L Sondhi : "Terrorism and Political Vilence : A Sourcebook", Har-Anand, New Delhi, 2000.

S K Shiva : "Terrorism in the New Millennium", Authors Press, New Delhi, 2001.

Ved Bhatnagar : "Challenges to Indian's Integrity: Terroism, Casteism, Communalism", Rawat, Jaipur, 1998.

News Papers and Journals

1. *Hindu. Times of India,*
2. *Hindustan Times,*
3. *Indian Epress,*
4. *Nav Bharat Times.*
5. *Jansatta,*
6. *Dainik Bhaskar,*
7. *The Tribune,*
8. *Amer Ujala,*
9. *The Economic Times,*
10. *Yojana. Kurkshetra. Out Look,*
11. *India Today. Loktantra Samiksha,*
12. *Sansdiya Patrika Delhi,*
13. *Rajasthan Patrika,*
14. *The Indian Journal of Political Science,*
15. *Economic & Political Weekly.*